# अलौकिक पढ़ाई भी...!

- ब्र.कु. अनुज,दिल्ली

**आप सभी के समक्ष एक प्रश्न है कि जब हम आप दुनिया में थे, पढ़ रहे थे, उस समय पर भी पढ़ाई और करियर को चुनने के लिए हमारा वश नहीं होता था। हमें या तो फ्रेन्ड्स बताते थे या फिर माता-पिता बताते थे कि या तो आप ये पढ़ो या वो पढ़ो, अपना कुछ भी नहीं था। इसीलिए बच्चे कहते रहे, करना मैं यह चाहता था, लेकिन उनके कहने पर मैंने यह किया।**

हो सकता है हम सौ प्रतिशत गलत हों, हो सकता है सही भी हों, लेकिन आप इसमें ना फँस, अपने हिसाब से देखो कि सच क्या है। एक तरफ आप जो करना चाहते हैं, दूसरी तरफ पूरा समाज, लोग, माता-पिता आपसे जो करवाना चाहते हैं। हमारे जीवन के दो ऐसे निर्णय होते हैं शुरू के, जिसमें पहला है पढ़ना व करियर, तथा दूसरा है शादी करना। यही तो सभी के जीवन के दो पहले निर्णय करने होते हैं। इसी पर हमने देखा है कि पूरी दुनिया का ज़ोर चलता है। आपका किसी चीज़ में मन लगता है, या नहीं लगता है, लेकिन लोग आपके ऊपर थोपते रहे और हम कोसते रहे। बाद में... अरे! मैं यह नहीं, यह करता तो अच्छा होता।

आज हम आध्यात्मिक जीवन की इसी से तुलना करके देखें तो इसमें भी कइयों का अनुभव यही कहता है कि मैं इसमें आना नहीं चाहता था, लेकिन मम्मी, पापा के साथ आते-आते हमारा इंट्रेस्ट बढ़ गया, या फिर मैं जुड़ गया, मुझे अच्छा लगने लगा। यहाँ भी वही बात है, कि मेरा यहाँ भी चुनाव करने का निर्णय आधार में है, कुछ दिन में ऐसा भी हुआ कि हमें ज्ञान बोरिंग लगेगा, फिर आप कहेंगे कि मैंने तो ऐसे ही आप लोगों का मन रखने के लिए कर लिया। मेरा मन कुछ और करने का था। जिन्हें भी आज ज़बरदस्ती जोड़ा गया है, सभी ज़्यादातर कुछ दिनों में अपने आप को पूरी तरह से संतुष्ट नहीं पाते हैं और छोड़कर जाने की सोचते हैं। सांसारिक जीवन में जो लोग नौकरी, धंधा करते हैं, आप उनसे मिलिए और पूछिये कि आप खुश हैं, तो उत्तर शायद नहीं ही होगा। क्योंकि उन्होंने यह निर्णय दुनिया के डर से लिया है। लोगों ने इतना दबाव डाला कि करना पड़ गया। आप सभी को नहीं लग रहा कि ये क्यों हो रहा है हमारे आध्यात्मिक जीवन में या फिर लौकिक जीवन में। इसकी थोड़ी गहराई में चलते हैं।

आपको हम बताना चाहेंगे कि ज़्यादातर लोगों को यह पता ही नहीं चलता कि उन्हें जीवन में करना क्या है। वैसे ही विद्यार्थियों को भी नहीं पता चलता कि उनका किसमें करियर बनाने का मन है, या किसमें वे सक्षम हैं। जीवन में या पढ़ाई में कुछ अच्छा करने के लिए, करियर बनाने के लिए हमें बैठना पड़ेगा, सोचना पड़ेगा, प्लैन करना पड़ेगा, वो कोई भी नहीं करना चाहता। कौन जायेगा इतना कुछ करने। सभी आराम तलब हैं, बैठ के हवाई किले बनाने में लगे हैं।

आध्यात्मिक जीवन यदि इतना आसान होता तो सभी उस चरम अवस्था को प्राप्त नहीं कर जाते! यह भी तो पढ़ाई है ना। इसमें भी बैठ के सोचना पड़ेगा। यह आध्यात्मिक करियर ऐसे नहीं बनेगा। इसको भी यदि आपने अपने मन से चुना है तो इसमें भी आपको कभी सफलता, कभी असफलता मिलेगी, ऊपर नीचे होगा, लेकिन उसे छोड़ आगे बढ़ना, उसका आधार किसी और को ना बना आगे बढ़ते जाना चाहिए।

यह पढ़ाई हर तरह के करियर बना देने में सक्षम है। बस करने के लिए, थोड़ा सहन कर, समा कर, थोड़ा त्याग भी नींद का, आराम का, इधर-उधर जाने का, समय वेस्ट करना छोड़ना तो पड़ेगा ना! यही करने पर ही लक्ष्मी नारायण की डिग्री हासिल होगी। नहीं तो यहाँ भी वही हो जायेगा...।

## उपलब्ध पुस्तकें
### जो आपके जीवन को बदल दे

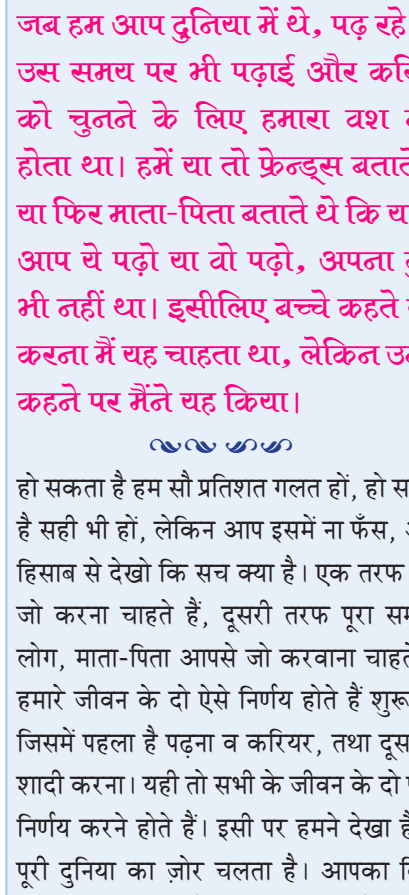

**कटक-ओडिशा।** ज्ञानचर्चा के पश्चात् शाश्वत मिश्रा,आई.ए.एस.,कमिश्नर ऑफ कमर्शियल टैक्सेस को ईश्वरीय पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. सुलोचना।

## मन की बात
- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

**प्रश्नः-** बाबा से मिलने के बाद मेरे जीवन में सुख-शांति आ गई। मेरी जन्म-जन्म की प्यास बुझ गई। परंतु मेरे परिवार में अभी भी अशांति बनी रहती है, कोई न कोई विघ्न आते ही रहते हैं। मैं इनसे मुक्ति का उपाय जानना चाहता हूँ?

**उत्तरः-** आप यदि अमृतवेले उठकर बहुत पावरफुल योग करेंगे तो आपके घर के अनेक विघ्न हट जायेंगे। घर को निर्विघ्न व सुख-शांति सम्पन्न बनाने के लिए घर के वायब्रेशन्स को खुशी व प्रेम से भरना आवश्यक है। जिस परिवार में खुशी व प्रेम होगा, वहां आपदाएं विपदाएं ठहरेंगी ही नहीं। खुशी के लिए एक ही बात करें कि किसी भी छोटी बात को तूल न दें। हर बात को हल्का करके जल्दी से जल्दी समाप्त किया करें। कुछ लोगों की आदत होती है बातों को लम्बा खींचने की, वे बातों को समाप्त करते ही नहीं। इससे सबकी खुशी नष्ट होती है। आपसी प्रेम बढ़ाने के लिए सभी को इस नज़र से देखो कि ये सब आत्माएं देवकुल की महान् आत्माएं हैं।

घर निर्विघ्न रहे इसके लिए अपने घर में, दुकान में या ऑफिस में 5 बार बाप-दादा का आह्वान करें और यह फील करें कि बाप-दादा आपके घर में आ गये और उनके अंग-अंग से चारो ओर किरणें फैल रही हैं।

तीसरी बात - घर में तीन बार दस-दस मिनट बैठकर इस तरह से योग करो कि मैं मास्टर ज्ञान सूर्य हूँ और ज्ञान सूर्य की किरणें मुझ पर पड़ रही हैं, फिर वो पूरे घर में फैल रही हैं। ऐसा करना नियम बना लो तो विनाशकाल में भी सुखद अनुभव होंगे।

**प्रश्नः-** मैंने पवित्रता की प्रतिज्ञा कर ली है, परन्तु अभी भी मुझे अपवित्र स्वप्न आते हैं तथा बुरे संकल्प भी चलते हैं, मैं अपनी पवित्रता से संतुष्ट नहीं हूँ। मेरा संकल्प तो सम्पूर्ण पवित्र बनने का है, उपाय बतायें?

**उत्तरः-** सम्पूर्ण पवित्रता की यात्रा एक लम्बी यात्रा है। इसके लिए चाहिए लम्बे काल की राजयोग की साधना। अपवित्रता के संस्कार लम्बे काल की तपस्या से ही नष्ट होंगे। यदि ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा करके कोई मनुष्य योग-तपस्या नहीं करता तो ब्रह्मचर्य उसे निराशा ही प्रदान करेगा। इसलिए जिन्होंने ब्रह्मचर्य का तप अपनाया है उन्हें प्रतिदिन 4 घण्टे योग-साधना करनी ही चाहिए, तब पवित्रता जीवन का आनंद बन जायेगी।

काम वासना को दबाने से वह पुनः स्वप्न व विकल्पों के रूप में जागृत होगी। वासना के कीटाणुओं को नष्ट करना है 'योग-अग्नि' से। तीन तरीकों से ये शक्ति रूपांतरित होती है। राजयोग की साधना से, मनन चिंतन से व कठिन परिश्रम से। यदि ऐसा नहीं तो ये शक्ति विघ्नकारी होगी। साथ में भोजन भी हल्का करें, मिर्च मसाले छोड़ दें। दक्षिण भारत के एक कुमार ने गाय के दूध पर जीवनयापन शुरु किया। 8 मास हो गये होंगे, वह सम्पूर्ण स्वस्थ है और उसकी पवित्रता आनंदकारी है। ज़रूरी नहीं कि आप भी ऐसा ही करें परन्तु भोजन की स्थूलता पवित्रता में बाधक है।

दो काम आप और करें। सवेरे आँख खुलते ही 7 बार संकल्प करें कि मैं पवित्रता का देवता हूँ, मेरी पवित्रता अति सुखकारी है और जब भी पानी या दूध पीयें तो उसे दृष्टि देकर 7 बार संकल्प करें कि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ फिर पीयें। विशेषकर सोने से पूर्व यह प्रयोग अवश्य करें तथा भोजन खाते भी व बनाते भी यही अभ्यास करें, इससे आपकी सारी समस्याएं समाप्त हो जायेंगी।

**प्रश्नः-** मेरी एक समस्या है कि जब मेरे पापा बीमार होते हैं तो मुझे उनसे मिलने नहीं दिया जाता है। ये कह दिया जाता है कि ये भी मोह है। इससे मैं भारी हो जाती हूँ, मेरे पापा ज्ञान के एकदम विरूद्ध हैं.. क्या ये ठीक है व मुझे क्या करना चाहिए?

**उत्तरः-** अनेक ज्ञानी आत्माएं मोह व कर्त्तव्य में अन्तर नहीं कर पाते। वे नहीं जानते कि अनासक्त रहकर सम्बंधों को कैसे निभाया जाए। ये अल्प ज्ञान का ही प्रतीक है। आपको उनसे अवश्य मिलना चाहिए। आप इष्ट देवी हैं, आपकी दुआओं से वे ठीक हो ही जायेंगे। उन्हें आत्मिक दृष्टि से देखते हुए प्रतिदिन सकाश भी देनी चाहिए। नातों को अलौकिक रूप से निभाना बड़े-छोटे सभी को सीखना चाहिए। हम ऐसे परस्पर प्रेम व शुभ भावनाओं से रहें जिससे ज्ञान प्रत्यक्ष हो, अन्यथा स्वार्थ, अहम् व छोटे विचार ही प्रत्यक्ष होते हैं। आप भारी न हों, मन को हल्का रखकर अपना कर्त्तव्य अवश्य पूरा करें चाहे मूल्य कुछ भी चुकाना पड़े।

**प्रश्नः-** मैं इनडायरेक्ट एक प्रश्न पूछ रही हूँ - एक व्यक्ति बहुत समय से ज्ञान में है, परन्तु पार्टियों में शराब भी पीता है और कहता है कि यह मेरी आदत नहीं है, मैं तो शौकियाना करता हूँ... ऐसे व्यक्ति की गति क्या होगी?

**उत्तरः-** ऐसे महापुरुष की गति वही होगी जो एक शराबी की होती है। वास्तव में तो वह ज्ञान में है ही नहीं, उसे स्वयं को बाबा का बच्चा भी नहीं कहना चाहिए। यह बाबा का अनादर है। भगवान के बच्चे और शराब! दोनों का कोई नाता नहीं। शराब का नाता तो आसुरी सम्प्रदाय से है। उसे यह बुरा शौक छोड़ ही देना चाहिए। अपने देव स्वरूप व महान स्वरूप को याद करके श्रेष्ठ स्थिति में स्थित होना चाहिए।

Contact e-mail
bksurya8@yahoo.com